वैश्वीकरण और पूंजीवाद का जनसमुदाय पर प्रभाव: एक दृष्टि

– कौशल कुमार पटेल

शोध सार –

वैश्वीकरण की उत्पति अर्वाचीन है । यह भूमंडलीकरण एवं बाज़ारीकरण का ही एक रूप है । वैश्वीकरण, विश्व में उपनिवेशवाद के अभ्युदय, पोषण एवं प्रसार का कलुषित परिणाम है । वैश्वीकरण, जनसमुदाय के सामने विकास के लोक–लुभावने रूप में प्रकट हुआ है, जो वास्तविकता में पूंजीवाद का छद्म रूप है । विश्व में होने वाले तमाम प्रकार के युद्ध, अप्रत्यक्ष रूप से वैश्वीकरण और पूंजीवाद के कुत्सित परिणाम है । वैश्वीकरण के अभ्युदय का मूल कारण पूंजीवाद है । भोग, सत्ता – लोलुपता, एवं वर्तमान भौतिक वस्तुओं की लिप्सा के कारण पूंजीपतियों के द्वारा जनसमुदाय का शोषण ही हुआ है । विश्व बाज़ार, अर्थव्यवस्था तथा बाज़ारीकरण में तेजी के नाम पर लोक – लुभावने सपने मध्यवर्गीय एवं हाशिए पर जीवन यापन करने वाले को दिखाए जाते है, मगर तकनीक एवं ऑटोमेशन के वजह से उनके रोजगार का ह्रास ही हुआ है । सरकारी कंपनियों को विनिवेश और विदेशी पूंजी निवेश के नाम पर बेचा जा रहा है । हम धीरे – धीरे आर्थिक गुलामी की ओर बढ़ रहे है । अतएव इन्हीं कारणों से आर्थिक असमानता एवं अनैतिक मुद्दों को तवज़्ज़ों मिल रही है और रोज़गार का ह्रास हो रहा है । सिर्फ विकास और आधुनिकीकरण के नाम पर गरीबों एवं हाशिए के लोगों का शोषण ही हुआ है । समाज के सबसे निचले तबके के लोग जो शोषित, दमित और अंत्यज हैं उन्हें उनके बुनियादी हक जल, जंगल और जमीन से महरूम किया जा रहा हैं ।

बीज शब्द –

वैश्वीकरण, नव उदारवाद, पूंजीवाद, अर्थव्यवस्था, ऑटोमेशन, तीसरी दुनिया, जल–जंगल, जमीन, किसान – मजदूर, कृषि, मुक्त व्यापार नीति, प्राकृतिक संसाधन, विनिवेश, एफ. डी. आई ।

भूमिका –

प्राचीन वाङ्मय साहित्य में व्यक्त, ''वसुधैव कुटुंबकम'' शब्द भारतीय संस्कृति का द्योतक रहा है तथा इस शब्द की विस्तृत अर्थ व्याख्या करें तो यह वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण जैसे अर्वाचीन शब्दों के समतुल्य समझा जा सकता है । वैश्वीकरण अर्वाचीन शब्द है एवं इसकी उत्पत्ति 20 वीं सदी के उत्तरार्ध में हुई है । वैश्वीकरण शब्द में जन समुदाय का एकत्रीकरण अवश्य दृष्टिगोचर होता है परंतु परिवार अथवा मानवीय संवेदना की झलक नहीं दिखती है । वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण के पनपने का प्रमुख कारक मानव और समाज है ।

मनुष्य की सामाजिक प्रवृति एवं उसकी महत्वाकांक्षा उसे नए सृजन के लिए सदा प्रेरित करती है । अपने अस्तित्व को बरक़रार रखने के लिए मानव अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में क्रियाशील रहता है । यह एक आम सामाजिक प्रक्रिया है । मानव जीवन का अस्तित्व भी मानव से जुड़ा है अर्थात मनुष्य का मनुष्य के साथ इच्छित सम्बन्ध ही समाज है । "मनुष्य का मनुष्य के साथ इच्छित सम्बन्ध ही समाज है ।" – मैकाइवर ।

मूल आलेख –

समाज, मानव के सभी इच्छाओं की पूर्ति करता है । मानव और समाज का अन्योनाश्रय संबंध है और इन्हीं कारणों से दोनों एक – दूसरे के पूरक समझे जाते है । मानवीय सोच और महत्वाकांक्षा, कल्पना को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है और शैनः शैनः मानव समाजीकरण तथा एकत्रीकरण की प्रक्रिया में अग्रसर होता है । वैश्वीकरण अथवा भूमंडलीकरण भी ऐसी ही सामाजिक प्रक्रिया है जहाँ विश्व के सभी देश मुक्त व्यापार प्रणाली को अपनाते है । वैश्वीकरण के माध्यम से एक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था, विश्व के अन्य देशों की अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ती है । बढ़ती हुई जनसंख्या, भौतिकवादी जीवन शैली तथा बहुसंख्यक समुदाय के भोग की प्रवृति से भी भूमंडलीकरण को बढ़ावा मिलता है । वैश्वीकरण से विश्व के तमाम देशों में अर्थव्यवस्था परिवर्तन होता है । व्यापार के सहयोग से देशों में एकजुट भी बढ़ती है । वैश्वीकरण का एक मुख्य उद्देश्य मुक्त व्यापार नीति को तवज़्ज़ो देना है । विश्व के तमाम विकासशील और पिछड़े देशों के द्वारा भी वैश्वीकरण की उन्मुक्त व्यापार व्यवस्था को अपनाया जा रहा है । दक्षेस देशों के संगठन सार्क में शामिल सभी देशों के बीच आपसी एवं क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए मुक्त व्यापार की नीति का अनुकरण किया गया ।

वैश्वीकरण (तात्कालिक उपनिवेशवाद का छद्म रूप) का प्रारंभिक रूप, यूरोप में हुए औद्योगिक क्रांति के बाद से ही दृष्टिगोचर होने लगता है । इस्पात का बड़े पैमाने पर उत्पादन एवं खपत, हथियारों का निर्माण, हथियारों की होड़ आदि इसके पनपने और प्रसार के प्रमुख कारक रहे । प्रथम विश्वयुद्ध एवं द्वितीय विश्वयुद्ध भी अप्रत्यक्ष रूप से उपनिवेशवाद या इसके अर्वाचीन रूप, वैश्वीकरण अथवा भूमंडलीकरण के ही कलुषित परिणाम है । पूंजीपतियों की आपसी स्पर्धा, व्यापारिक नियंत्रण भोग एवं सत्ता लोलुपता ने कई युद्धों को जन्म दिया । आपके देशों के संगठन पर नियंत्रण हेतु नाटो एवं पूर्व सोवियत संघ के बीच हमेशा से वर्चस्व की स्पर्धा रही । पूंजिपतियों के द्वारा प्राकृतिक संसाधनों मसलन पेट्रोलियम, कोयला आदि पर नियंत्रण कर विश्व की अर्थव्यस्था में व्यापक उलट फेर किया गया । तीसरी दुनिया के देशों में उच्च तकनीक के अभाव का फायदा उठाकर पूंजीवादी देशों ने उदारवाद के नाम पर अपना नियंत्रण रखने शुरू किए । तमाम खनिज सम्पदाओं का दोहन अवैज्ञानिक तरीके से हुआ और इसमें पर्यावरण के संरक्षण के नियमों की अवहेलना हुई । फलस्वरूप जल, थल, और वायु

तीनों स्तर पर प्रदूषण में व्यापक बढ़ोतरी हुई । परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत क्षय जैसे समस्याओं, वनों की अंधाधुन कटाई से कार्बन डाई आक्साइड आदि गैसों की बढ़ोतरी एवं प्रकृति के ऊपर संकट फैलना शुरू हुआ । इसका प्रतिकूल असर न सिर्फ मानवों पर पड़ा बल्कि कई दुर्लभ जीव–जंतु और पक्षी विलुप्त हो गए अथवा विलुप्ति के कगार पर आ गए है ।

धीरे – धीरे पूंजीपतियों का वर्ग उदारवाद का लिवास ओढ़ कर जनसमुदाय के सामने आया । विकासशील देशों में अर्थव्यवस्था में तेजी, शेयर बाज़ारों में उछाल, रियल स्टेट सेक्टर को मजबूत करने के नाम पर विनिवेश को बढ़ावा मिला । ऍफ़. डी. आई. को बढ़ावा देने के लिए अकर्मण्य सरकारों द्वारा पूंजीपतियों के लिए रेड कारपेट बिछाए गए । विकास एवं अर्थव्यवस्था में तेजी के नाम पर नवउदारवाद का घृणित चेहरा जनसमुदाय के सामने आया जब जल, जंगल और जमीन से लोगों को बेदखल किया जाने लगा । भारत जैसे विकासशील देशों में तकनीक एवं ऑटोमेशन के नाम पर रोजगार छीने जाने लगे और बढ़ती हुई जनसंख्या का बड़ा हिस्सा, हाशिये का जीवन बिताने के लिए मजबूर हुआ तथा तीन मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति ही परम लक्ष्य बन गया और फिर रोटी, कपड़ा और मकान की तलाश में गांव से शहरों के तरफ पलायन शुरू हुआ । ये कारवां बिहार, यूपी. बंगाल, और ओडिशा जैसे पिछड़े राज्यों से शुरू हो कर मुंबई, हैदरबाद, चैन्नै, दिल्ली, और बैंगलोर जैसे शहरों में भी शायद खत्म होती हो । कुछ उन्नत कामगारों ने खाड़ी देशों की ओर रुख किया । निसंदेह इससे विदेशी मुद्रा भण्डार में बढ़ोतरी हुई और अर्थव्यवस्था में उछाल आया । लेकिन ग्रामीण इलाकों, छोटे शहरों में विकास के नाम पर सरकारी कार्यालयों, भ्रष्ट नेताओं और पदाधिकारियों के बीच सरकारी योजनाओं में लूट एवं कालेधन का बंदर बाँट हुआ । स्मार्ट शब्द का छदम प्रयोग करके नगरों के विकास का आश्वासन दिया गया । लोगों को आधुनिकीकरण के नाम पर भ्रमित किया गया जबकि जमीनी हकीकत का आलम ये रहा कि गरीब मजदूरों को उनका हक़ तो दूर, बल्कि हक़ के लिए आवाज़ उठाने पर शोषण ही हुआ ।

वर्तमान समसामयिक में जो हालात, कोविड 19 से उपजे है वे अप्रत्यक्ष रूप से सत्ता एवं भोग की लोलुपता के कलुषित परिणाम है । भले ही यह अमेरिकी – चीन के बीच बाजार एवं व्यापार के वर्चस्व को लेकर हो अथवा अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी बादशाहत को सिद्ध करने के लिए हो । जनसंख्या वृद्धि एवं सीमित साधन, पलायन के प्रमुख कारक है और चीन जैसे देश इसे भुनाने के लिए भ्रष्टनीति को अपनाते है, जिसका परिणाम ,"वन चाइना नीति" है । वैश्विक स्तर पर, सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिकी वर्चस्व में वृद्धि हुई और पूंजीवाद को संरक्षण प्राप्त हुआ । विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसे संघटन भी अप्रत्यक्ष रूप से पूंजीवाद देशों के समर्थक रहे है । फलस्वरूप पश्चिमी संस्कृति विशेषकर अमेरिकी संस्कृति पूरे विश्व में फैली, लेकिन अमेरिकी पूंजीवादी वर्चस्व कुछ घरेलू पूंजीपतियों को नापसंद लगी तो हाशिए पर गुजर बसर करने वाले

के लिए कैसे सुरुचि पूर्ण हो । पूंजीवाद का नया रूप उदारवाद है जो अपनी लोक लुभावनी छवि को जनसमुदाय के सामने पेश करता है परन्तु कलुषित भाव से ग्रसित है जिसके वजह से विदेशी पूंजी निवेश के मार्ग सुलभ होते है और रोजगार के सुनहरे अवसर और सपने दिखाए जाते है लेकिन वस्तुतः जमीनी हकीकत कुछ और होती है ।

मार्क्स और एंगल्स ने पूंजीवाद के स्वरुप का गहरा अध्ययन किया और पूंजीवाद पर अपनी तथ्यों को प्रस्तुत किया । "इजारेदार पूंजीवाद का विरोध सारी दुनिया की जनता से है । प्रसार के लिए अब खाली जगह नहीं है इसलिए इजारेदार देशों के आपसी अंतर्विरोध का बढ़ना अनिवार्य है और अपने ही देश की जनता से इजारेदार पूंजीवाद का विरोध बढ़ रहा है । मई 1992 में जर्मन मजदूरों की राष्ट्रव्यापी हड़ताल इसका प्रमाण है । मार्क्स और एंगल्स का नारा – सभी देशों के मज़दूरों, एक हो । आज और भी सार्थक है । इनके साथ करोड़ो किसान, कारीगर और मध्य वर्ग के लोग है । उत्पादन और वितरण के साधनों पर थोड़े से सूदखोर देशों के एकाधिकार को तोड़ना जनवादी क्रांति का सारतत्व है । जनता की खुशहाली के लिए उनका उपयोग करना समाजवाद का लक्ष्य है । अतः आज हम शेली के शब्दों को और भी विश्वास से दोहराते है – "उठो । नींद से जागे हुए शेरों की तरह उठो । अजेय समुदाय बनकर उठो । सोते हुए में जो जंजीरे तुम पर आ पड़ी थी ओस की बूंदों की तरह झटकर उन्हें जमीन पर गिरा दो । तुम अनगिनत हो, वे मुट्ठी भर है ।"[1]

इन विचारों का दुनिया के देशों पर गहरा प्रभाव हुआ और साम्यवादी विचारों का अभ्युदय हुआ । रूस में साम्यवादी विचारों का प्रसार हुआ और वहाँ लेनिन के नेतृत्व में जनक्रांति हुई, कालान्तर में लैटिन अमेरिकी देश, क्यूबा में फिदेल कास्त्रो के नेतृत्व में कम्युनिस्ट सरकार अस्तित्व में आयी । भारत में तात्कालिक समय में नेहरू और सुभाष जैसे जनवादी नेता उनके विचारों से प्रभावित हुए तथा कांग्रेस दल के भीतर भी समाजवादी दृष्टिकोण देखने को मिला । पूंजीवाद को कभी भी मूर्धन्य साहित्यकारों, दर्शनशास्त्रियों अथवा जन सरोकारी नेताओं द्वारा प्रशस्ति प्राप्त नहीं हुआ, अपितु उनके द्वारा पूंजीवाद की घोर आलोचना हुई । मार्क्स और एंगल्स के विचारों से प्रभावित होकर अंग्रेजी विद्वान् शेली ने भी पूंजीवाद का विरोध किया । शेली से मार्क्स तक भौतिकवादी दर्शन का मार्ग सीधा था बीच में व्यवधान थे हेगल । शेली से एंगल्स तक क्रांतिकारी जनवाद का मार्ग भी सीधा था शेली ने 1819 में अपने देशवासियों के नाम एक गीत (song to the men of England) में कहा था –

"जो बीज तुम बोते हो, उसकी फसल दूसरा काटता है
जो सम्पदा तुम पैदा करते हो उसे दूसरा धर लेता है
जो वस्त्र तुम बुनते हो, उन्हें दूसरा पहनता है

बीज बोयो – लेकिन किसी अत्याचारी को फसल मत काटने दो ।

सम्पदा प्राप्त करो – झूठे दावेदारों को उसे न धरने दो ।

वस्त्र बुनो – निठल्लों को उन्हें मत पहनने दो ।"[2]

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ तक़रीबन 70–80 % जनसंख्या गांव में निवास करती है और कृषि उत्पाद का मुख्य दायित्व किसानों और मज़दूरों पर निर्भर है । "यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि कृषि – प्रधान देश में भूमि का अत्यधिक महत्व होता है और भूमि पर जनसंख्या के भारी दवाब तथा निजी स्वामित्व की परिस्थितियों के फलस्वरूप भूमि का न केवल आर्थिक वरन सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी महत्व होता है ।"[3]

पूंजीवाद का जनसमुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा, खासकर ग्रामीण इलाकों में जहाँ किसान, मजदूर तथा बुनकर जिनका देश की अर्थव्यवस्था के उत्थान में योगदान रहा । आधुनिकीकरण के नाम पर नए हाइब्रिड बीजों के इस्तेमाल, फ़र्टिलाइज़र एवं रासायनिक खाद के इस्तेमाल आदि का बाज़ारीकरण हुआ । एक तरफ मिट्टी की उर्वरा शक्ति जाती रही दूसरी तरफ सूदखोरों एवं महाजनों से कर्ज लेकर किसानी करने वालों पर ख़राब मानसून और मौसम की दोहरी मार से फसल चौपट हुई । फलस्वरूप पुनः कर्ज का चक्र तथा अंत में इस अस्थायी समस्या का स्थायी निदान किसानों ने आत्महत्या के रूप में चुना । दक्षिण एवं पश्चिम भारत में महाराष्ट्र तथा विदर्भ के इलाकों जिनमें मध्यप्रदेश के भी कुछ हिस्से शामिल रहें, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु के किसानों की आत्महत्या की रिपोर्ट सामने आयी । ये आंकड़े काफी बड़े है अगर स्वंय सेवी संस्थाओं अथवा गैर सरकारी संगठनो की रिपोर्ट मानें तो । बैंकों से लिए गए कर्ज अदायगी के लिए मजदूरों का पलायन आरम्भ हुआ और वे शहर की तरफ भागे, लेकिन वहां भी उनका शोषण ही हुआ । शोषण पर लिखा हुआ महाप्राण निराला के काव्य, ' कुकुरमुत्ता ' की कुछ पंक्तियाँ –

"अबे सुन बे गुलाब

भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट"[4]

न सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों व मजदूरों को बल्कि जंगल में जीवन यापन करने वाले गरीब आदिवासी जनजाति समुदायों को, औद्योगिकरण के नाम पर जल, जंगल और ज़मीन से महरूम किया जा रहा

है । जल, जंगल और ज़मीन ही आदिवासियों के अस्तित्व की बुनियाद है, लेकिन वैश्वीकरण के दुष्परिणाम के फलस्वरूप इन्हें अपनी मिट्टी से बेदखल किया जा रहा है । पूंजीपतियों, माफियाओं तथा भ्रष्ट सरकारी गठजोड़ इनके वज़ूद को मिटाने में लगे है । कमोबेश पूरे विश्व के आदिवासी जनजातियों की यही स्तिथि है, चाहे वे ब्राज़ील के अमेज़ॉन जंगलो के आदिवासी हो अथवा छत्तीसगढ़, ओडिशा, महाराष्ट्र और त्रिपुरा क्षेत्र के हो विकास के नाम पर उनका शोषण ही हुआ है । मेट्रो, रेलवे, बाँध और हाइड्रो प्रोजेक्ट के नाम पर जंगलों की अंधाधुन कटाई और नदियों के मार्ग सीमित किये जा रहें है । फलस्वरूप प्राकृतिक आपदाएं भी अनियंत्रित होती जा रही है । अतः शोषण के परिणामस्वरुप जब आदिवासी समुदाय विरोध प्रदर्शन करती है तो पूंजीवाद समर्थित सरकारें उनका क्रूरता से दमन करती है । शासन की बन्दूक भोले – भाले मजदूर, किसान और दलितों के लिए है जैसे – प्रगतिशील कवि नागार्जुन के काव्य, 'शासन की बन्दूक' की कुछ पंक्तियाँ –

"सत्य स्वंय घायल हुआ, गयी अहिंसा चूक
जहाँ – तहाँ दगने लगी शासन की बंदूक"5

हाशिए पर जीवन यापन करने वाले गांव के लोगों तथा छोटे कस्बों के गरीब मजदूर एवं दलितों पर शासन के अभिजात्य एवं सामंती वर्ग के द्वारा घोर अत्याचार हुए । राजनीति के वटवृक्ष का आश्रय लेकर सामंती वर्ग तथा जमींदारों एवं पूंजीवाद का ढोल पीटने वाले छुटभैये नेताओं ने जातीय विद्वेष, सम्प्रदायवाद तथा क्षेत्रीयवाद को बढ़ावा दिया । हर तरह से दलितों का शोषण हुआ, कभी जमीन लूटने के नाम पर, कभी चोरी – डकैती का झूठा आरोप लगा कर, कभी डायन अथवा कुलटा का आरोप लगा कर गरीब स्त्रियों का दैहिक शोषण हुआ ।

" कैसी चोरी, माल कैसा ? उसने जैसे ही कहा
एक लाठी फिर पड़ी बस, होश फिर जाता रहा
होश खो कर वह पड़ा था झोपड़ी के द्वार पर
ठाकुरों से फिर दरोगा ने कहा ललकार कर
" मेरा मुँह क्या देखते हो ! इसके मुँह में थूक दो
आग लाओ और इसकी झोपड़ी भी फूँक दो"[6]

निष्कर्ष – अगर उपर्युक्त पंक्तियों का विश्लेषण करे तो यह ज्ञात होता हैं, समकालीन बदलता भौतिक परिवेश वैश्वीकरण अथवा इसके पर्याय Globalization का ही त्वरित परिणाम है । वैश्वीकरण और बाज़ारवाद

पूंजीवाद अर्थव्यवस्था की होड़ का प्रतिफल हैं । सामान्यतः वैश्वीकरण या बाज़ारवाद एक लुभावना शब्द प्रतीत होता है जो तीसरी दुनिया के देशों में विकास का लिहाफ ओढ़ कर प्रवेश करता हैं लेकिन मूलतः जल, जंगल और जमीन तथा उनसे जुड़े किसान – मजदूर एवं उनकी बुनियादी स्वरूप को खोखला करने का प्रयास करता हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1.पाश्चात्य दर्शन और सामाजिक अंतर्विरोध – रामविलास शर्मा – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. संख्या – 243.

2. वही पृष्ठ – 230

3. भारतीय ग्राम, डॉ. श्यामाचरण दूबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ, संख्या – 12.

4. निराला संचयिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 128–129.

5. यूआरएल–kavitakosh.org –नागार्जुन की कविताएँ ।

6. Kavitakosh.org– आदम गोंडवी की कविताएँ ।

शोधार्थी, जैन अभिमत पात्र विश्वविद्यालय।
सहायक प्राध्यापक, माउंट कार्मेल महाविद्यालय, स्वायत्त, बेंगलुरू।
मोबाईल – 9900243101, ईमेल – kaushalkumar0209@gmail.com